नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 14.09.2018

प्रकाशनार्थ

हिन्दी हमारे संस्कार की भाषा है। अंग्रेजी अपने में बहुत समर्थ भाषा होते हुए भी हमारे संस्कारों की भाषा नहीं है। हिन्दी की खास बात यह है कि इसमें जिस शब्द को जिस प्रकार से उच्चारित किया जाता है उसे लिपि में लिखा भी उसी प्रकार जाता है। बगैर राष्ट्र भाषा के राष्ट्र गूंगा होता है, दुर्भाग्य से भारत की आज तक अपनी कोई राष्ट्र भाषा नहीं बन पायी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर मदन मोहन मालवीय एवं राम मनोहर लोहिया जैसे तमाम राष्ट्र भक्तों द्वारा हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाये जाने के अथक प्रयास को नेहरू की अंग्रेजियत ने कमजोर कर दिया। जिस हिन्दी को संविधान में सिर्फ राजभाषा का दर्जा प्राप्त है उसे कभी गाँधी जी ने खुद राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी। भारतीय पुनर्जागरण के समय भी राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन और महर्षि दयानन्द जैसे महान नेताओं ने हिन्दी खड़ी बोली का महत्व समझाते हुए इसका प्रसार किया। आजादी की लड़ाई में हिन्दी ने विशेष भूमिका निभाई क्रांन्तिकारियों ने जनमानस से सम्पर्क साधने के लिए इसी भाषा का प्रयोग किया। उक्त बातें महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ में आयोजित **हिन्दी दिवस के अवसर** पर बोलते हुए प्रतिष्ठित साहित्यकार, समालोचक, पूर्वोत्तर रेलवे के सेवा निवृत्त महाप्रबन्धक **श्री रणविजय सिंह** ने कही। श्री सिंह ने कहा कि अज्ञेय कहा करते थे कि हिन्दी भारत के हृदय देश की कुन्जी है। हिन्दी में ही सारा भारत बोलता है। आजादी के समय हमारे नीति–नियन्ताओं में आत्मविश्वास की कमी था अतः 1966 तक हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने से रोक दी गई और आज तक 1966 नहीं आया। राहुल सांस्कृत्यायन ने कहा था कि नेहरू की कोई भाषा नीति नहीं है। यह तथ्य बताता है कि हिन्दी के साथ नेहरू ने न्याय नहीं किया। आज खतरा यह है कि अंग्रेजी हमारे संस्कारों की भी भाषा बनती जा रही है। यद्यपि कि अपनी भाषा से कटने के कारण स्मृतिलोप एवं आत्मनिर्वासन की ओर हम बढ़ चलते हैं। हिन्दी बाजार की भाषा बने किन्तु बाजारू भाषा न बने। हिन्दी ज्ञान के सभी अनुशासनों की भाषा बनें। भाषा संस्कृति की बुनियाद है। भाषा सभ्यता और संस्कृति को वाणी देती है। अपनी भाषा से कटने वाला समाज अपनी संस्कृति अपनी परम्परा से कट जाता है।

श्री सिंह ने कहा कि संविधान सभा में गैर हिन्दी भाषा प्रतिनिधियों ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने की पैरवी की। लेकिन तमाम उठा–पठक के बावजूद तत्कालीन कांग्रेस के अग्रणी नेतृत्व के आगे भारत की आत्मा कही जाने वाली और भारत में सबसे अधिक क्षेत्र में बोली जाने वाली हिन्दी राजभाषा बनी। भारत में हिन्दी भाषा का लम्बा इतिहास रहा है। आठवीं शताब्दी से भारत में हिन्दी बोली जाने वाली सबसे प्रमुख भाषा रही है। गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी बातचीत के माध्यम के रूप में आज भी प्रतिष्ठित है। अरूणाांचल के तमात जनजातियों की अपनी–अपनी भाषा है लेकिन इन जनजातियों के आपस में बातचीत हिन्दी भाषा में होती है। भारत के ऐसे तमाम क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति आत्मीय व्यवहार दिखलाई पड़ता है। राम मनोहर लोहिया का यह

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़- गोरखपुर
फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416
मो. : 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 14.09.2018

(2)

व्याख्यान कि ''मेरी समझ में वे लोग बेवकूफ हैं जो अंग्रेजी के चलते हुए समाजवाद कायम करना चाहते हैं, वे भी बेवकूफ हैं जो समझते है कि अंग्रेजी के रहते जनतंत्र आ सकता है। हम तो समझते हैं कि अंग्रेजी के रहते ईमानदारी आना भी असम्भव है। थोड़े से लोग इस अंग्रेजी के जादू द्वारा करोड़ो लोगों को धोखा देते रहेंगे।'' हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा इसलिए भी होनी चाहिए क्योंकि यह नैतिकता की भाषा है, यह संवेदना की भाषा है, यह प्रेम की भाषा है, और कुल मिलाकर यह हर भारतीय की भाषा है। इसमें भाव है, करूणा है, त्याग है और संस्कार भी है।

समारोह में प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव सहित शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 आरती सिंह ने एवं आभार भूगोल विभाग के प्रभारी डॉ0 विजय कुमार चौधरी ने किया।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी